UNIVERSAL LIBRARY
OU_182528
UNIVERSAL LIBRARY

प्रभाकर प्रभा

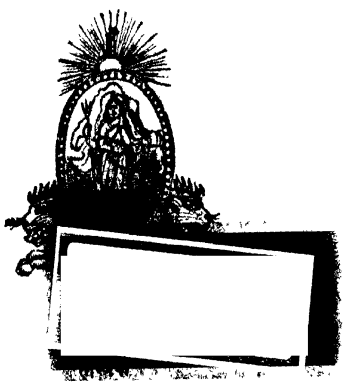

रावत, चतुर्भुजदास चतुर्वेदी

...र्य. आनर्स, प्रभाकर

...रतपुर म्यूज़ियम

...रतपुर।

H 81·6
C49P

प्रथमवार १०००

सर्वाधिकार सुरक्षित सम्वत् २००७

मूल्य ॥)

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक 'प्रभाकर प्रभा' मेरी उन कविताओं का संग्रह है जो समय २ पर जब २ उमंग उठी या तत्सम्बन्धी कोई घटना घटी लिखी गई और जो सामयिक पत्र पत्रिकाओं में छापी जा चुकी है

पाठकों की अभिरुचि तथा कला प्रेमी अपने आसन्न हृदय सेठ श्री मनोहरलालजी की इच्छा की पूर्ति हेतु यह प्रभाकर प्रभा पुस्तककार जनता जनार्दन के कर कमलों में है आशा है प्रेमी पाठक प्रस्तुत पुस्तक की कविताओं का पाठ कर अपना धार्मिक तथा अध्यात्मक मनोवृति को तृप्त कर सकेंगे जिससे मेरा परिश्रम सफल होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में दी हुई "भाता का धन" शीर्षक कविता श्रीमती विदुषी धर्मपत्नी श्री सेठ मनोहरलाल जी ने पढ़ी। पुस्तक प्रकाशित होने के लिये आपकी विशेष इच्छा रही अतः प्रस्तुत

पुस्तक आप ही के उत्साह से छपाई जारही है अतः आप धन्यवाद की पात्र हैं।

ललित कला प्रेमी श्री सेठ मनोहरलाल जी से मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि वे भविष्य में अन्य हिंदी की पुस्तकें प्रकाशित कराकर मातृ भाषा हिंदी के भण्डार को भरते रहेंगे। और अपना नागरी नेह का परिचय भी कराते रहेंगे।

श्री रामदयाल जी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके परिश्रम से पुस्तक प्रेस में छापी जारही है।

चतुर्भुजदास चतुर्वेदी

साहित्य-कुटीर
दहीं गली भरतपुर
दिनांक १३ अगस्त १९५०

लेखक

प्रार्थना

सूर्य चन्द्र और तारे चमके,
चमके सारे देश प्रदेश।
किन्तु अँगीठी मुझ गरीब की,
है ठंडी ही पड़ी महेश ॥१॥
हे वैश्वानर ! इसे जगा दो,
देकर अपनी चिनगारी।
होगी कृपा तुम्हारी महती,
पूरैगी इच्छा भारी ॥२॥

श्री गणेश वंदना

जय जय गणपति गणेश,
काटो संकट कलेश।
विघन हरण मोद भरन मंगल सुखकारी ॥१॥
जय जय श्री शिव सुवन,
एक दन्त गज वदन।
मोदक प्रिय मोद भरन दीन दुःखहारी ॥२॥
जय जय श्री शुभ्रवर्ण,
गज कैसे दीघ कर्ण।
लम्बोदर गजानन मोद भरो भारी ॥३॥

जय जय श्री चतुर्भुज,
शंख पाशु है विचित्र।
मूषक वाहन है पास, मोदक कर धारी ॥४॥

शारदा वंदना

रक्त-वर्ण, मुख चार सुशोभित द्वै कर सुन्दर,
अक्ष माल कर रुचिर कमण्डल है अति शुभकर।
ब्रह्मी वेद समेत करे रक्षा जो मेरी,
हरे सकल सब शोक प्रभा फैलाय घनेरी।
जो माय दया की खानि और शुभ सुन्दर मति,
करें अनुग्रह सदा जगत में राखे मम पति ॥

याचना

हे प्रभु सुनिये विनय हमारी;

राष्ट्र सुराष्ट्र बने सब विधिसों सुजला सफला धारी।
ब्राह्मण ब्रह्म तेज युत होवें क्षत्रिय धनु व्रतधारी;
शत्रुन कों उन्मूल करैं नित राज करें सुखकारी।
रहैं सम्पन्न देश की गऊऐं हृष्ट-पुष्ट-पय वारी;
बैल बली हों, अश्व तीव्र-गति होवें परम बिहारी।
नारी-जन धारण कुटुम्ब में बनें सामरथवारी;

जन सुसभ्य युवा श्रम शाली-धन वैभव अधिकारी
वर्षहिं मेघ समय पर नीके पवन चलै हितकारी;
औषधि हू सब सफला होवहि बनें सदा गुनकारी।
दास चतुर्भुज करौ कृपा यह रक्षा होय हमारी;
हम सब सदा कृतज्ञ रहैं प्रभु बार बार बलिहारी।

श्री राम नाम

श्री राम नाम नित जप मन मेरे।
जासों भव-संताप मिटैंगे,
कटि हैं दुःख घनेरे॥
दीन बन्धु की दया कोर से,
जग बिच हुइ हैं केरे।
दास 'चतुर्भुज' कहा प्रभु एसो,
करै काम सब तेरे॥

बंधन

(१)

लालच वश कौतुक लखने को,
आन फंसा इस बंधन में।
देख यहां का जाल अलौकिक,
विस्मय अधिक हुआ मन में॥

(२)

जग बंधन मकड़ी जाले के,
सदृश फैलता जाता है।
हरि का नाम बिसरता जाता,
बंधन पार न पाता है॥

(३)

तूने डाला मुझे अकारण,
इस बन्धन में क्यों माली?
मैं तो यों ही घूम रहा था,
वृक्षों की डाली डाली॥

(४)

बंधन करना खेल तुम्हारा,
क्या समझो यह अत्याचार।
बंधन से क्या तुम्हीं बचे हो,
इसे विचारो हे सुविचार॥

(५)

मुझे बताओ राह छुट कर,
मैं घूमूं स्वच्छन्द समोद।
विचरण कर एकांत भूमि पर,
गाकर तेरे गीत प्रमोद॥

(६)

निर्बल जीवों पर दरसाओ—
दया, न दो उनको बंधन।

तब तो तुम भी हो जाओगे,
पूर्ण रूप मे ज्रब-बन्धन ॥
(७)
इतना अत्याचार हमारे साथ,
तुम्हारा है क्या कम ?
नेक विचारो अपने मन में,
आखिर एक रूप हम तुम ॥
(८)
केवल बधन किया न मुझको,
किन्तु किया मेरा सब घर।
आश्रित जीव तड़पते भूखे,
बिलख-बिलख कर रो-रो कर ॥
(९)
उन पर दया करो बल शाली,
हे माली क्यों बने कठोर ?
मैं हूँ मूक, न छल-बल मुझ में,
कृपा दृष्टि कीजिए अथोर ॥
(१०)
मेरी कोमल हृदय-लता को,
काटा क्यों आकर तुमने ?
बोला माली, "इसी हेतु,
बंधन डाला तुमको मैंने" ॥

(११)

कोमल प्रेम-लता जिसकी मैं,
सींच-सींच सरसाता हूँ।
उसे काटते नहीं मानते,
कितना मैं समझाता हूँ॥

(१२)

दर्द नहीं करते तब मन में,
जब काटो कोमल डाली।
पाकर दण्ड शिकायत करते,
बड़े बने गौरव शाली॥

(१३)

जैसा कर्म किया है तुमने,
वैसा फल भोगो इस बार।
अवश्य भोगना तुम्हें पड़ेगा,
अन्य न ढोवेगा यह भार॥

(१४)

बीज बो चुके जब बबूर का,
आम कहां पा सकते हो।
मग में कण्टक कर्म बिछाये,
सुख से क्यों चल सकते हो॥

(१५)

हे सुन्दर माली तुम देखो,
सदा दिगम्बर रहते हम

तन पर तार न एक हमारे,
भोजन नहिं पाते हरदम ॥

(१६)

बड़े कष्ट में क्षुधा मिटाते,
खाकर शाक-पात फल-फूल ।
'अमृत पड़े हों' फिर भी कहते,
नहीं हिचकते किसी भूल ॥

(१७)

बोला माली, 'अटल सत्य यह,
सुख दुख जग में होता है ।
इसको अपना जो जन समझे,
ठोकर खाकर रोता है ॥

(१८)

यह भव सिन्धु अगाध अपरिमित,
दुस्तर तह तक जाना है ।
सोच-समझ ले गहन तत्व यह,
पार किसी विधि लगना है ॥

(१९)

डूब गया यदि जग समुद्र में,
तब कुछ हाथ न लगना है ।
जाग जाग रे जीव बटोही,
अन्त समय में मरना है ॥

(२०)

धन्यवाद हे माली तुमको,
दिया परम सुन्दर उपदेश।
मैं बड़भागी हुआ आज लख,
तेरा अनुपम सुन्दर वेष॥

(२१)

तुमसा सद्गुरु पाकर फिर मैं,
अन्ध कूप में पड़ा रहूँ।
और कहां तक हाथ बांधकर,
इसी ठौर पर खड़ा रहूँ॥

(२२)

कष्ट-कसौटी पर कस कस के,
तुमने देख लिया मुझको।
हुआ नहीं संतोष अभी तक,
क्या फिर भी पूरा तुमको॥

(२३)

शरण तुम्हारी मैंने ली है,
चाहे नष्ट करो या भ्रष्ट।
अथवा देकर कष्ट कसौटी,
मुझको मत करिये अब नष्ट॥

(२४)

आत्म शक्ति औ सत्य शक्ति के,
बल पर तुम्हें झुकाना है।

और समर्पण कर शरीर यह,
अपनी कथा सुनाना है ॥

(२५)

सुन सुन कर यह करुण क्रन्दन,
पिघलेंगे पाषाण सभी ।
और हमारी दीन दशा लख,
होंगे द्रवित शीघ्र तुम भी ॥

(२६)

दलित कुसुम का मूल्य नहीं है,
कुचलो अथवा मल डालो ।
हृदय लगाओ दुखी समझ या,
धूल धूसरित कर डालो ॥

(२७)

उसने तो जीवन दे डाला,
तेरे हाथों को माली ।
देख तुझे वह त्याग चुका है,
पहले ही प्यारी डाली ॥

(२८)

तुझे किया अधिकार समर्पित,
जो चाहे सो तू कर डार ।
किसी देव के सिर पर रखदे,
अथवा बना गले का हार ॥

(२९)

लता उतरती चढ़ती रहतीं,
इसका कुछ भी करो न सोच।
ये तो आश्रय पाकर फैलें,
बिन आश्रय बन जातीं पोच॥

(३०)

कला विचित्र बनाती ये हैं,
अपनी ललित कलाओं से।
मुट्ठी में सब को कर लेतीं,
लचक दिखाय सलाओं से॥

(३१)

औरों का मन हरने वाली,
ये मन हरणी बेलें हैं।
मन एन्जिन इन पर है चलता,
इससे चिकनी रेलें हैं॥

(३२)

ललता-लता जाल में फंस कर,
किसके मन नहिं मुरझाये।
ज्ञानी अज्ञानी हो बैठे,
मानी मन में सरमाये॥

(३३)

मैं हूँ कौन, कौन तुम माली,
इसको बिलकुल मैं भूला।

ध्यान न रहा तुम्हारा किंचित,
अपने मद में मैं फूला ॥

(३४)

जैसा मन भर मैं फूला था,
अब बारी झड़ने की है।
हुआ अभी तक चेत न मुझको,
किससे क्या लड़ने की है ॥

(३५)

उचक उचक कर नभ तारों को,
वृथा छुआ करता है मन।
होते विफल प्रयत्न हमारे,
स्वस्थ न रह पाता है तन ॥

(३६)

मन मधुकर मड़राता मेरा,
लख-लख तेरा विश्व पराग।
इसी लिये करने लगता है,
गुन-गुन कुछ अनजानी राग ॥

(३७)

मुक्ति हमारी हाथ तुम्हारे,
माली दया दिखा दीजे।
अपना मुझे समझ कर मन में,
अपनी चरण शरण लीजे ॥

(३८)

चेतो जीव ! हमारी मानो,
तुम को जो देते शिक्षा।
इससे जीवन भर में होगी,
भली भांति सब विधि रक्षा॥

(३९)

धरा धाम धन एक दिवस सब,
हो जावेगा अवश विनष्ट।
सुयश तुम्हारा कभी न होने,
पावेगा इस जग में नष्ट॥

(४०)

क्षणिक धनुष की स्थिरता पर,
कर लेना फिर भी विश्वास।
किन्तु चपल सुन्दर बेलों का,
करना मत कदापि विश्वास॥

(४१)

ये ललाम बेलें आकर्षित,
करतीं जिसमें फसते सब।
इसे ध्यान में रक्खो, जाओ,
मुक्त किये देता हूँ अब॥

(४२)

मैं हूँ ऋणी, विदा होता हूँ,
कृपा कोर रखिये मुझ पर।

दया भाव से मुझे बचाना,
मालिक माली पग पग पर ॥

(४३)

जय हो सदा तुम्हारी माली,
दिया करो ऐसे उपदेश।
जिससे सुधरें सभी जगत के,
जीव जन्तु जन और जनेश ॥

आत्म-निवेदन

(१)

बरगद की शीतल छाया हो,
सुन्दर सरिता तट के पास।
वर्ण-वर्ण की बेल लगीं हों,
मद-कारक जहां होय सुवास ॥
शीतल जल पीने को उत्तम—
मिले साथ में बीड़ा एक।
चन्द्रमुखी तुम साथ सदां हो,
करने को कविता सुविवेक ॥

(२)

लख-लख तेरा सुन्दर आनन,
भव्य-भाव उपजे मन में।
कष्ट किनारा करें उसी क्षण,
दिव्य ज्योति फैले तन में॥
रूप अलौकिक के दर्शन से,
छुट जावें भव के सब फन्द।
निर्मल मन हो शुचिमय तन हो,
चित्त स्फूर्ति न होवे मन्द॥

(३)

जग में निज कीरति को छोड़ें,
मधुर लालिमा पूर्ण ललाम।
यश कोकिल चारों दिशि कूके,
परमानन्द रहें सब धाम॥
जग जीवन का सार यही है,
सुख मय आयु चले प्रतिक्षण।
और सदा झड़ते हम देखें,
दुख के झाड़ों के कण-कण॥

(४)

भली भांति से परख लिया है,
मैंने इस जग का सब सार।
मेरे लिये तुम्हीं सब कुछ हो,
माता-पिता बन्धु और यार॥

अतः कृपा कर मुझ को दीजे,
अपना परम पुनीत-सनेह।
और कमक मन की हर लीजे,
गले लगा मुझको इक बेर॥

(५)

लौन-लौनी लता झूमती,
उन वृक्षों के चारों ओर।
हर्ष भरी सब फूल रहीं है,
इठलाती हैं मुख को मोर॥
कभी-कभी अपनी कोमल,
शाखाओं को डुगलाती है।
लूम झूम कर इधर उधर को,
चञ्चल गति में जाती है॥

(६)

मन्द समीर सुहावन डोले,
लहर-लहर लहरें लहरें।
अमल-कमल खिलरहे मुदित हो,
परम छटा से छबि छहरें॥
बन बिहङ्ग बोलें बल खायें,
रहते वे क्यों मन को मार।
उनको क्या तेरी चिन्ता है,
पर मेरा मन दुखी अपार॥

(७)

कहां-कहां करते हम आये,
यहां खोजने मन में ठान।
किन्तु न अबतक पाया तुमको,
रहा हृदय में ये अरमान॥
यदि मैं भूला अपने पथ को,
करके कृपा बता दीजे।
देवि! अनुग्रह करके मुझ पर,
अपनी चरण शरण लीजे॥

(८)

हृदय चीर कर मेरा देखो,
रमी हुई तुम रग रग में।
बिना तुम्हारे नहीं सुहाता,
मुझ को रहना, इस जग में॥
सुजला सफला भूमि तुम्हारे-
बिना, नहीं अच्छी लगती।
नहीं सुहाते राग रंग जग-
की बातें फीकी लगतीं॥

(९)

नहीं कृपा अब तक की तुमने,
यह अचरज मुझको भारी।
वेद साक्षी है इसका तू,
दयामई अति हितकारी॥

हे लक्ष्मी तुम करो अनुग्रह,
तब संसारी सुख पाऊं।
और मगन मन होकर फिर से,
प्रेम गीत को मैं गाऊं॥

(१०)

जीवन डोरी हाथ तुम्हारे,
नहीं टूटने पावे यह।
यत्न पूर्वक साधे रहना,
भय न दिखाना ऐसा कह॥
मुझको चाहे सभी जगत के,
मैं किस किस का मन रक्खूं।
कर्म बन्ध में बांध सभी को,
अनाशक्ति का रस चक्खूं॥

(११)

यह साधारण नियम जगत के,
सब से नचवाते हैं नाच।
किन्तु तुम्हारा भक्त मुक्त हो,
इनसे नचवाता निज नाच॥
किन्तु तभी यह सम्भव होता,
उसके वश जब होती हो।
प्रबल भक्ति वह शक्ति मोहनी,
जिसके बल तुम झुकती हो॥

(१२)

तुम हो मेरी हृदय-ईश्वरी,
जगत मान रखने वाली।
तुमरे बल पर भाव वृक्ष पर,
काव्य-कोकिला है पाली॥
इसको अब स्वच्छन्द विचरने,
दो देखो डाली डाली।
कैसा रंग दिखायेगी खिल,
उठे बाग का भी माली॥

(१३)

प्रेम पताका को फहरा कर,
करो दिव्य अनुराग प्रकाश।
मेरी शुष्क लता आशा को,
जीवन देकर करो विकाश॥
तुमरी शुभ्र ज्योत्सना से,
जगमगा उठेगा जीवाकाश।
फूल उठेगा हृदय कमल,
पाकर के तेरा प्रेम प्रकाश॥

(१४)

अद्भुत रूपमयी तुम होगी,
किस विधि वर्णन करूं यहां।
दिव्य शक्ति की रखने वाली,
है सर्वत्र प्रकाश जहां॥

मुख सरोज को देख देख कर,
भ्रांत भ्रमर मंडराते है।
वेनी को लख शेष प्राण,
उत शेष रहे ही जाते है॥

(१५)

तुम रतनारी आभा वाली,
तीन लोक मे परम प्रसिद्ध।
तेरी छवि पर है बलिहारी,
चौदह भुवनों की सब सिद्ध॥
तू है विश्व नागरी सुन्दर,
गुरुता की गागर है पूर्ण।
भव्य भाव की बड़ी सागरी,
रसन रसीली ध्वनि सम्पूर्ण॥

(१६)

परम मोहिनी सब विधि सुन्दर,
विधि की तू सिरजन हारी।
विश्व वाटिका की तू कोमल,
कलियों की रानी प्यारी॥
तुझसी तुही न और जगत मे,
बड़ी ईश्वरी है कोई।
भक्ति भाव की केवल भूखी,
जाति पांति कोई होई॥

(१७)

जिस मन मन्दिर में तुम रहतीं,
करतीं उसको स्वर्ग समान।
बिना तुम्हारे वह मानो है,
भूत-वासना का स्थान॥
जिस घर में है पूजन तेरा,
वह घर सब विधि से सम्पन्न।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध यहां पर,
भरे हैं सब विधि के अन्न॥

(१८)

आओ मन मन्दिर की देवी,
खोज खोज कर मैं हारा।
व्यर्थ हुआ अब तक मेरा श्रम,
मिला नहीं दर्शन प्यारा॥
बल केवल विनती का मुझ में,
तुम चरणों में मेरा माथ।
सुनी अन सुनी करो तो क्या बस,
मेरा, मैं तो पूर्ण अनाथ॥

(१९)

लाखों फूल खिले इस जग में,
झड़े, न उनका नाम निशान।
भाग्यवान है वही पुष्प,
जो सुर सिर चढ़ता पा सम्मान॥

वही पुरुष है धन्य हुआ जो,
जीवन जिसका अनुकरणीय।
और नहीं तो जीवित रहना,
उसका मानों है मरणीय॥

(२०)

कैसी मादक प्यास प्रेम की,
करती है मुझ से परिहास।
पनघट घटता जाता प्रति पल,
किन्तु न घटती बढ़ती आस॥
ठहर ठहर कर मम तृष्णा के,
आंगन में देती संदेश।
धैर्य धरो, चञ्चलता छोड़ो,
इच्छा हों पूरण हर भेष॥

(२१)

क्रमशः सब उठ रहे किन्तु मैं,
नहिं उठ पाया हूँ अब तक।
करूं प्रतीक्षा और तुम्हारी,
सत्य कहो मैं अब कब तक॥
अथवा गिनता रहूँ तड़पता,
पाने को वे सुख घड़ियां।
या मैं खाता रहूँ दुःख की,
या ही दुखदाई छड़ियां॥

(२२)

मुझसे सुमन न सञ्चय होता,
हृदय हो गया है बेचैन।
देख तुम्हारी राह हमारे,
थके सुकोमल सुन्दर नैन॥
वायु निराशा अति प्रचण्ड है,
बुझता दीप सनेह बिहीन।
बढ़ती जाती और विकलता,
तन मन थका हुआ अति दीन।

(२३)

देख हमारी दशा, उधर देखो,
कलियां भी हसती हैं।
फूल फूलते गर्व गरीले,
लज्जित डाली नवती है॥
विकल कमल भी नत मस्तक हो,
मम वियोग दरसाते हैं।
मेरे व्यथित हृदय का तुमको,
फिर-फिर ध्यान दिलाते हैं॥

(२४)

मेरी दशा पूछ लो अब तुम,
उड़ते विविध विहंगों से।
कोमल हृदय, काव्य के प्रेमी,
विरह व्यथित सब अंगों से॥

देखो सन सन करके करना,
पवन ध्वनित सब मेरा हाल।
लता वृन्द सब पत्र हिला कर,
भगते हामी हैं तत्काल॥

(२५)

अपन समझ सभी के आगे,
मैंने अपना हाल कहा।
किन्तु किसी सहृदय के दृग से,
आंसू तक है नहीं बहा॥
यह संसार कठोर बड़ा है,
निश्चय करके अब जाना।
यहां नहीं निभ सकती मेरी,
मेरे मन ने यह माना॥

(२६)

प्राण विलम्ब लगाते अब क्यों,
इस शरीर को ही छोड़ो।
हृदय हीन, इस जग के अपने,
दैहिक बन्धन को तोड़ो॥
ये विचार जब आते हैं तब,
यह कह तुम समझाती हो।
"क्यों हारे हिम्मत हो बैठे",
दे उत्साह रिझाती हो॥

(२७)

पर कुछ नहीं उपाय ढूंढ़ती
जिससे मन को शांति मिले।
भारस्वरूप बना जब जीवन,
आशा-पथ से क्यों न टले॥
हृदय पुष्प मुरझाता जाता,
विरह व्यथा के ही कारण।
याद तुम्हारी होती जाती,
क्रमशः जीवन का मारण॥

(२८)

यह घट यदि फूटेगा तो तुम,
प्रेम सलिल नहि पाओगी।
खाली खपरों से क्या फिर तुम,
अपना दिल बहलाओगी॥
टुकड़े-टुकड़े बिखरेंगे जो,
फैलेंगे हर जगह यहां।
और तुम्हारे प्रेम मिलन की,
बात कहेंगे जहां तहां॥

(२९)

चूना पानी के मिश्रण से,
अपना तेज दिखाता है।
पानी ही से पुरुष जगत में,
तेजस्वी कहलाता है॥

पानी जीवन सब जीवों का,
जिसके बिना न चलते काम।
मेरे लिये किन्तु पानी से,
दुगुना ललित तुम्हारा नाम ॥

(३०)

यह जग जंकशन रेल स्टेशन,
यात्री आता जाता है।
कोई भूखा बैठा जाता,
कोई मौज उड़ाता है॥
कोई विरह वेदना सहता,
कोई मस्त दिखाता है।
इश भक्त कोई बिरला जो,
तेरी महिमा गाता है॥

(३१)

रही समाई रोम-रोम मेरे,
मन भाई जगमग ज्योति।
अतः लोचनों से बह उठता,
तेरी सुध का सुन्दर श्रोत॥
छिपी हुई उन कुन्ज कुटी में,
बन कर मेरे मन की पीर।
फिर क्यों लगे टेरने तुमको,
कठिन कुचाली कंठ सुकीर॥

(२६)

(३२)

बिन अपराध किया तुमने जो,
मुझको विकल, ये भ्रम भारी।
विपदा टाल बचालो जीवन,
आलस नींद हटा सारी॥
तेरे मिलने की आशा मे,
अपना सब कुछ लुटा चुका।
फिर भी तेरा वह कठोर मन,
मेरी ओर, हा! नहीं झुका॥

(३३)

जटिल जाल में इस माया के,
पाता जीव विषाद बड़ा।
शांति सलिल है घटता जाता,
पाकर विरह प्रचण्ड कड़ा॥
जीवन पौधा लगा सूखने,
प्रेम बूंद अब बरसा दो।
आशा लता लगी जो मेरी,
उसको अब तुम सरसा दो॥

(३४)

मानस-तम सब हरो हमारा,
जीवन गेह प्रदीप्त करो।
मुक्ता रूप मनोरथ मेरे,
उनको आ उद्दीप्त करो॥

अपनी कला दिखाकर मेरी,
ललित कला कमनीय करो।
प्रभा विकाश करो अन्यन्तर,
मम महिमा महनीय करो॥

(३५)

नीरस जीवन करो मधुर मय,
हे कल्याणी अब मेरा।
तू सर्वोपरि शक्ति जगत की,
तेरे चरणों पर डेरा॥
मेरा मन अब दुखी अधिक है,
आधि-व्याधि से मानी हार।
शांति-द्वार को खोल हृदय में,
लेकर अपना नव अवतार॥

जीवन पथ

जीवन पथ में नहिं विचलित हो।
वीर सदा पालो वह धर्म॥ १
अग्रणीय बन करो सुयश का,
चित्ताकर्षक सब शुभ कर्म॥ २
मोह रात्रि को त्याग स्वपथ पर,
बढ़े चलो वीरों बांके॥ ३

देख तुम्हारा जौहर अद्भुत,
शत्रु सदा बगलें झांकें ॥ ४
नेह नागरी का हो तुम में,
होवे देश, प्रेम परिपूर्ण ॥ ५
वेष तुम्हारा मीधा होवे,
नेम अगाध भरा सम्पूर्ण ॥ ६
विजयी बनो दिखादो पूरा,
अपना सब को वह उत्थान ॥ ७
दास "चतुर्भुज" देश तुम्हारा,
प्यारा सब से हिन्दुस्तान ॥ ८

मनोरन्जन

(१) सुनाता

नल के जल की तरह किसी विधि,
मैं उठ पाता ऊपर।
एक धार से सदा रिझाता,
तेरे कर में रह कर॥

तेरे वस्त्रों से लग लग,
अपने आंसू पुछवाता।
उसका एक कोण पकड़ कर,
मैं अपनी कथा सुनाता॥

(२) पतंग

बिजली के लट्टू पर हो,
लट्टू पतंग बहु आते।
सिर धुनते औ चकराते,
पुन हो हताश गिर जाते।

प्रेमी से प्रेम न पाकर,
पछताते हैं अति मन में।
फिर लगते लोट लगाने,
बस भस्म रमाकर तन में॥

आये कितने उस पथ पर,
सब गये सदा झकमारे।
पर प्रेम पन्थ नहिं पाया,
हारे हिय भागे मारे॥

(३)

प्रेम की प्याली में दो डाल,
माधुरी सार सभी अपना।
देख लो थोड़ा मेरी ओर,
करो मत हा! मुझको सपना॥

मानलो मेरा कहना वरन,
पड़ेगा विरह अग्नि तपना।
अरे ओ निष्ठुर प्रेमी जीव,
तनिक तो कर मेरा कहना॥

जगत का सार लिया है धार,
हमारा जाने हृदय अपार।
बिना जाने तुम लेते सदा,
जलधि में उलटी वही पछार॥

यहां देखो इस जग के बीच पड़ी,
दुख सुख की बड़ी कछार।
न फंसना उभय बीचि के बीच,
न करना सुन्दर कौल करार॥

मीत तू रख धीरज मन बीच,
प्रीत-सागर से होगा पार।
'चतुर्भुज' के चरनों का ध्यान,
और सन्तोष यही जग सार॥

(४) फन्दे में

यह सब कुछ तब ही होता है,
जब होती है तेरी दृष्टि।
बिना तुम्हारे बल के पाये,
क्या कोई कर सकता सृष्टि ?

वर्षा ऋतु की तरह जीव,
पैदा होकर के होता नष्ट ?
इससे उसको पता न सर्दी,
गर्मी का क्या होता कष्ट ?

इसी तरह से जीव अन्य जो,
फँसे मोह के फन्दे में।
वे क्या जानें तेरी महिमा,
जो नित रहते फन्दे में॥

(५) समाज और जीव

निज समाज से बिछुड़ा प्राणी,
पाता नहीं कहीं आदर।
जैसे वृक्ष पात गिरने पर,
जाता कुचला पग पग पर॥

ठोकर खाता फिरता इत उत,
शान्ति न मिलती है उसको।
हृदय हीन सा रहै अनमना,
जग में जगह न है उसको॥

(६) दीजिये

जिसने न अपनी और अपने,
देश की उन्नत करी।
शुद्धि भावों में न है,
निज मातृ भाषा ही भरी॥

तो जन्म लेना जगत में,
उस पुरुष का निस्वार्थ है।
जो रहा बस पेट की चिन्ता में,
कर पुरुषार्थ है॥

ऐसे पुरुष से किस तरह हो,
जन्म भूमि प्रभावती।
और हो किस तरह से पुन,
धर्म रक्षा बलवती॥

अतएव कर साहस यहां पर,
कुछ न कुछ तो कीजिये॥
और अपने देश को भारी धरोहर दीजिये

(७) चाह

हार गले का यहां बनाने आया तुमको
हार गया, हैरान हुआ नहिं पाया तुमको
करते कहां बिहार हाल बतलाया किसको
सहते दुक्ख अपार न माना तुमने मुझको
दया दृष्टि अब फेर प्रेम दिखलाओ मुझको
शरण तुम्हारी नाथ दीन अपनाओ मुझको

(८) बीज

ऐ छोटे से बीज भरा तुझमें ये है सारा संसार।
तेरे में उत्पन्न जीव जब होता है
तब खिलता है अपार॥
तेरा ही अस्तित्व सृष्टि में,
तेरे पर निर्भर जग सार।
तू ही जग कर्ता, नायक,
मूर्तिकार है अजब सुनार

तुझ में विश्व, विश्व मय तू है
बड़ा अलौकिक सिरजन हार,
जो फलता है और फूलता,
फैलाता जग में रस धार ॥

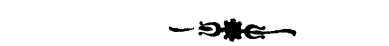

विजयी होवे यह स्वदेश

(१)

ये मेरे सुन्दर शुभ्र केश ।
पग पग पर करते हैं सचेत ॥
आयू घट से जीवन जलका ।
घटना, चलना उस सुख प्रदेश॥

(२)

तृष्णा की चादर तू उतार ।
चिन्ता चेरी को छोड़ खेत ॥
रसना पर रसमय यही शब्द
बस विजयी होवे मम स्वदेश

(३)

मैं शान्ति चित्त से यह देखूं ।
मेरा घर है सम्पन्न सुवेष ॥
है यहां भरे सब रत्न माल ।
अब फिर नहि जायेगा विदेश ॥

मनोरंजन

(१)

जल की चादर के अन्दर,
ये नैन मीन को उछलें।
उठती तरंग को आकर,
वे निजकर में रख कुचलें॥
मन कच्छपतहां न माने,
लै लच्छ आपना दौरे।
पर हिय हिलोर ही उसकी,
करती मन उसका औरे॥
ये सुन्दर तरल तरंगे,
अंग अंग से जा इठलाती।
जातीं नागिन सी कैसी,
लहराती वे चल खाती॥
कूलों के कूल से लगलग,
वे झुकी डालियां छूती।
प्रिय मिलन प्रेम मों करके,
मन मोद भरे हो चलतीं॥

(२)

पानी ढरका जब मोती का,
तब उसका वह मोल कहां।
पुरुष गये जल होता जगमें,
डमाडोल सर्वत्र जहां॥

(३)

जो सकल संसार में प्रज्ञा स्वारुप विराजती।
सर्वथा सब ठौर अपनी शक्ति अद्भुत डालती॥
नित्य भक्तों पर सदा रखती है करुणा दृष्टि जो।
सज्जना को जो सदा देती सुमति सुख वृष्टि जो॥
परम पावन जो दया की खान परम ललाम है।
उस अखिल जगदीश्वरी को कोटि २ प्रणाम है॥

(४)

सोहत रम्य अनूप सुहावन पर्वत श्रेणी।
सरिता बहति सुनील रङ्ग धनि सुन्दर बेणी॥
विटप खिले बहु पुष्प करत क्रीड़ा तहँ ललन।
उड़त मोर कर सोर फिरैं काहू को डरना॥
सोहत बांकी छटा सो यह विशाल भारत सभी
मानों सोकर हो उठा कर प्रणाम रवि को अभी॥

(५)

कोमल गुलाब के पत्ते से,
कोमल गात तुम्हारा है।
अमल कमल सी गन्ध सुहावन,
मन भावन अति प्यारा है॥
कल कदम्ब केतकी कली के,
बीच डोलता देखा है।
लौनी लौनी ललित लताओं,
के ढिंग रहता देखा है।

सुन्दर बन उपवन में चरते,
मन हरते भी देखा है।
सागर की सुन्दर हिलोर में,
कल्लोल करते देखा है॥

प्रकृति पुरुष तू धन्य हमेशा,
प्रकृति छटा छहराता है।
अपनी मन मोहनी मूर्ति पर,
सब के मन खिचवाता है॥

(६)

मित्रों में सत्कार रूप मैं,
सगे सहोदर में हूँ प्रेम।
नारी में सौन्दर्य रूप से,
स्थिति व्रत में हूँ मैं नेम॥

मैं वैभव हूँ धनी जनों का,
और पराक्रम वीरों का।
सब में हूँ विश्वास रूप से,
क्या पैगम्बर पीरों का॥

जड़ी बूटियों का मैं रस हूँ,
ओज रूप मे रग रग का।
आत्मा हूँ देही के अन्दर,
चमत्कार हूँ सब जग का॥

(७)

सफल मनोरथ होना चाहो,
तो तुम काम किये जाओ।
कभी न मन से हो हताश,
धुनि के पक्के बनते जाओ॥
कोई कार्य कठिन नहिं जग में,
जिसे न तुम कर पाओगे।
मन के नीचे गिरने से,
सारे संकल्प गमाओगे॥
जो कहते हैं बहुत न उनसे,
होते काम यहां कोई।
जो घनघोर गर्जते हैं,
वे नहीं डुबाते इक पोई॥
यश और नाम चाहने वाला,
होता बहुधा पूर्ण हताश।
किन्तु सभी पर विजयी होता,
धुनि की पक्का, राखे आस॥

मेरी लाज

प्रभु मुझे शांति का मार्ग दिखा दो।
जग झंझट से ऊब गया मन,
इस पर शान चढ़ादो॥
भटकत मन अटकत पग पग पर,

इसको स्थान दिलादो।
चिदानन्द रूपी मधु देकर,
इसकी तृषा बुझादो।
जैसे बने करो यह इच्छा,
पूरन प्रेम मिलादो॥
विनय करूं मैं अति विनम्र हो,
मेरी लाज रखा दो॥

मिला रहूँ

हृदय हमारा मिला आप से,
तुमको त्याग किसे ध्याऊं।
किसका जाकर पल्ला पकड़ूं,
किसका जी मे हुलसाऊ॥
मैंने ठाना है यह मन में,
निश दिन तेरा यश गाऊं।
जो कुछ भी इस जग में मेरा,
उसको तुझे चढ़ाऊं॥
अतः प्रेम से मेरा करले,
कभी न होना मुझसे दूर।
गन्ध पुष्प में ज्यों रहती है,
त्यों प्रभु रखना ही भरपूर॥
मैं छोड़ूं दुनियां के झंझट,
तुम भी त्यागो अपना धेह।

उभय परस्पर परम निबाहें,
अपना अपना सच्चा नेह ॥
तुझ से हो मेरा प्रकाश अरु,
मैं प्रकाश मय तुझ से हूँ।
भीतर बाहर रङ्ग एक हो,
साथ न छूटे मिला रहूँ ॥

मन की उमङ्ग

(१)

मैं अपना राम कहानी,
किस-किस को जाय सुनाऊ।
नहिं हृदय किसी के पाया,
जिसको जाकर अपनाऊं ॥

सब अपने अपने रंग में,
हैं रंगे खिलाड़ी न्यारे।
मैं किसको जाय बुलाऊ,
दुख दर्द सुनो तुम प्यारे ॥

आओ आओ प्रभु आओ,
नहिं ज्यादा देर लगाओ।
इस दुखी हृदय को धीरज,
तुम आकर शीघ्र बंधाओ ॥

(२)

खिल उठा कमल मुख कैसा,
अपने सुमित्र को पाकर।
दाड़िम ने दांत दिखाये,
डाली से झुककर आकर॥

चिड़ियां भी सब चहचाईं,
मन हो प्रसन्न सब विधि से।
कोयल ने कूक सुनाई तोता,
बोले निज मुख से॥

प्यारे बसन्त को पाकर,
बौराये वृक्ष वहां के।
शृंगार हार ने हंस के,
सब फूल चढ़ाये आके॥

(३)

बन उपबन की हरियाली,
छिपते सूरज की लाली।
क्या प्रबल छटा छहरातीं,
मिलकर पल्लव औ डाली॥

वे पर्वत शिखा सुनैली,
सुन्दर सब विधि से लगतीं।
वे ठण्डे वायु झकोरे,
अंग-अंग को शीतल करतीं॥

झरने का मीठा पानी औ,
कन्द मूल फल खाना।
वह स्वर्ग सुक्ख सा सुन्दर,
एकांत बैठ कर गाना॥

औ प्रकृति पुरुष की पूजा,
तब अति सुन्दर सी लगती।
सन्ध्या की शांति सुहावन,
है सब क्लेशों को हरती॥

(४)

हरी दूब से ढकी भूमि थी,
बिछी चांदनी चादर।
उस पर बच्चे खेल रहे थे,
करके सब का आदर॥

सुखद सुहावन अवसर था,
मन भावन रेन सलोनी।
तुतली बोली बच्चों की,
लगती थी लोनी लोनी॥

कोई हाथ पसारे बैठा,
मुट्ठी मारे कोई।
कोई घुटना के बल चलता,
लोट लगाता कोई॥

अपने मन से सभी मग्न थे,
ज्ञान न सुख-दुख का था।

नहीं ज्ञान अपना तेरी का,
भाव अनूप भरा था ॥

(५)

सघन कुञ्ज की इक निकुञ्ज में,
मधुकर मदमाते फिरते ।
गूंज गूंज चहुं ओर घूमकर,
कलियों का रस जा पीते ॥
उनका झुण्ड देख कर मैं कुछ,
चकित हुआ सा रहा वहां ।
और ध्यान से लगा श्रवण कर,
मधुर सुरीली तान तहां ॥
इतने में घनश्याम आगये,
लगे सलिल वह बरसावन ।
मन्दी मन्दी फुहारों से,
मन और हुआ अति सरसावन ॥
फूल उठे सब मोर जोर से,
कौकाए सारंग सब संग ।
उस उपवन में नाच उठा भर,
आनन्द देख सुहावन रंग ॥
पशु पक्षी करते किलोल थे,
मैं भी उनका संगी था ।
उनके ऐसे स्वर्ग सुखों का,
बना वहां पर अङ्गी था ॥

(६)

धन्य मार्ग के त्रिटप,
धन्य तुम पर उपकारी।
शीतल छाया छोड़ पथिक,
सुख देते भ री ॥

लेते अपने अग ताप,
सूरज की सारी।
शरणागत की सदा,
ध्यान से की रखवारी ॥

पत्र पुष्प और फलन से,
कर उनका सत्कार।
ढेला डन्डा खाय कर,
नहिं करते इन्कार ॥

(७)

प्रति स्वामा में शेष रही,
तेरे दर्शन की आशा एक।
अपना ही जन जान कृपा कर,
शीघ्र निबाहो मेरी टेक ॥

लगी हुई लौ रहती मन में,
किस विधि प्रेम वारि पाऊं।
तेरे से हर भांति मिलूं मैं,
अपने मन की कर पाऊं ॥

अपने-अपने मन की मिल कर,
कहें सुनें जिससे हो तोष।
एक प्रान हो रहें सदा हम,
तब होगा मुझको संतोष॥

जग पालक यदि है तू तो,
पूरा कर प्रण मेरा आकर।
हृदय कमल पर बैठ निरंतर,
मन मेरे को समझा कर॥

(८)

निशि काली तारे चमकें,
क्या रूप नया दिखलाते।
ये प्रकृति देवि के ऊपर,
रत्नों का ढेर चढ़ाते॥

आता है लपक के कोई,
धरती की ओर उमग कर।
जैसे गुरुजन के चरणों को,
छूता आय उछल कर॥

(९)

मैं तेरे कारण भटका बन बन,
किन्तु तुझे नहिं पाया।
थक गया, निराश हुआ हर तरह,
पर नहिं ध्यान गमाया॥

लो आया आया कह कर,
मन मेरा तुमने भरमाया।
पर मृग तृष्णा की तरह,
सदा ही मेरा जिय ललचाया ॥

(१०)

तुमसा पाकर ऐसा साथी,
फिर भी क्या हम दुःख झेलें।
कहो कौन के बल पर हम,
अब रंग मञ्च पर खुल खेलें ॥

कब तक देखें बाट तुम्हारी,
क्या डाला कानों में तेल।
जो नहिं सुनते बात हमारी,
क्या कहने इसको ही मेल ॥

(११)

जो प्रातः की प्रिय समीर में,
अति प्रफुल्ल हो फिरती है।
और धूप में सदा मोद में,
गर्मी का सुख गहती है ॥

जो तारों के मध्य चमकती,
शक्ति कौन सी वह अनुपम।
वृक्षों में कलियों सी खिलती,
जीवों में जीवन हर दम ॥

जो अविभक्त हुई फैली,
फिरती है कर पूरा विस्तार।
सदा करे निज कार्य जगत में,
अव्यय रूपी अपरम्पार॥
चींटी से हाथी तक में है,
जिसका अद्भुत पूर्ण प्रकाश।
देकर स्वांसा इकसा पाले,
सब जीवों को दे विश्वास॥

(१२)

हृदय बीन का तार न छेड़ो,
फिर न रुकेगा यह तुम से।
और भगोगे दूर कहीं को,
छलिया छल कर हिय हम से॥
हमने जाना जैसे तुम हो,
तुमने जाना भी भरपूर।
इतने ही पर रहने दो प्रभु,
नहीं कहीं हम तुम से दूर॥
यदि तुमको यह अच्छा लगता,
दुख देना हमको भरपूर।
तो हम भी अब सहने को,
तैयार खड़े होकर मजबूर॥
अपने मनकी खूब निकालो,
जितनी तुम कर सकते हो।

और हमें कष्टों कणु से,
मनमाना बहु घिस सकते हो ॥

घिसते-घिसते हमें तुम्हारा,
हाथ न घिस जाये भगवन ।
होगी पीड़ा अधिक तुम्हारे,
है केवल डर मेरे मन ॥

(१३)

जब तक तेरे मन मन्दिर में,
अहंकार का है गा बास ।
तब तक ईश्वर भी तुझसे है,
उदासीन नहिं आता पास ॥

उस प्यारे के पाने को यदि,
है तू उत्सुक अति भारी ।
तो फिर उसके ही सुप्रेम की,
बो दे तू सुन्दर क्यारी ॥

और सदा ये भाव जमा हो,
मैं तो तू ही हूँ हर भांति ।
अतः नहीं दरकार रही,
कुछ पूंछन की ये जाति औ पांति ॥

कंज

अहो कञ्ज कमनीय कहो, क्यों फूले नहीं समाते हो।
खिल खिलकर खिलखिला, रहे हो किसकी हंसी उड़ाते हो।
कनक कोष पर फूलो मत तुम, क्षणिक विभव है संसारी।
नीति वायु का झोंका देकर, कर देगा पल में न्यारी॥
चेत करो निज मनमें तुम, अब मित्र जिसे कहते नहि मित्र।
गर्व छोड़के ईश भजनकर, प्रेम बढ़ाओ बिमल पवित्र॥
भ्रमर गूंज कर सारे इसको, ले जायेंगे दम भर में।
जिन पँखड़िन मे प्रेम तुम्हारा, झड़ जायेंगे पल भर में॥
कहो मौन क्यों साधा तुमने, कहते क्यों नहिं मनकी बात॥
चिकने घड़े बने तुम ठाड़े, बूंद न उठती है तब पात॥
रस मे जो तुम डूबे रहते, कान न लाते हित की बात॥
नाकों को फीकी कर गिनते, यही तुम्हारी उल्टी बात॥
अभी सवेरा ही है सोचो, व्यर्थ न खोवो जीवन को।
नितप्रति सुमरन धरो चतुर्भुज, जगदीश्वर के चरनन को॥

नूतन वर्ष

सदा शुभकारी हो नव वर्ष, करें नित नूतन निज उत्कर्ष॥
दूर जायें सब व्याधा भाग, अलापें सदा एकयता राग॥
परम पावन हो जीवन धन्य, रहें हम सब विधि से सम्पन्न
करो प्रभु पूरी अभिलाषा, आपसे लगी हुई आशा॥

माता का पश्चाताप

(१)

प्राप्त करने को किये प्रयत्न, भटकते फिरे मिले सुत रत्न
सहे सब वे अनहोंने कष्ट, किया नहिं तुमको मैंने रुष्ट

(२)

बिताई कोरी आंखों रात्रि, आस में यही बनो तुम पात्र
खिलाया तुमको मनमाना, न अपना पेट है कुछ जाना

(३)

हर तरह राखा तुम्हें प्रसन्न, कभी तुम होगे बहु सम्पन्न
अगर तुम धोके से रोये, हमारे मान सभी खोये

(४)

पुत्र ! पुत्री से समझा अधिक, बजाये बाजे फैली महिक
लड़ाये लाड़ प्यार के साथ, नेह का रक्खा तुम पर हाथ

(५)

मगन मन हुए देख तुमको, लगी आशा थी कुछ हमको
कहा राजा बेटा रणधीर, करोगे नाम बनोगे वीर

(६)

हरोगे सभी हमारी पीर, बनोंगे इस कुटुम्ब के मीर
अगर तुम थोड़े अलसाये, हमारे मन भी मुरझाये

(७)

इस तरह हुए सयाने तात, प्रभा प्रकटेगी बीते रात
पढ़ाया हृदय खोलकर तुम्हें, लोग विद्या अधिकारी कहें

(८)

हुए पढ़ लिखकर जब तैयार, ब्याह की हमें हुई दरकार
बुढ़ापे में सुख पाने को, प्रबल इच्छा थी जाने को

(९)

खोजकर लई सुलक्षण नारि, बहू को दिये सभी अधिकार
लता आशा पर ओस पड़ी, उजर गई खेती सभी खड़ी

(१०)

न कर पाये हम पूरा प्यार, बन गये दुलहिन के तुम हार
हमारी सब सेवा भूले, जवानी के जग में फूले

(११)

बसाया अपना घर जा अलग, न मानी मनसे थोड़ी विलग
बुढ़ापे का नहिं मनमें ध्यान, न सोचा कभी कहां कल्यान

(१२)

रहे अपने में तुम भूले, आयु के कारण हम भूले
तोड़ दी तुमने सारी आस, विवश हैं अब शरीर में स्वास

(१३)

पड़ गये जीवन के लाले, काम नहिं आये जो पाले
हृदय को तोड़ दिया मझदार, जगत में हुई हमारी हा

(१४)

हो गया कुछ का कुछ संसार, है प्रभु की लीला अपरम्पा
हुए हम विफल मनोरथ हाय, न लेते हमसे कोई ग

(१५)

बुढ़ापे की तुम हो लकड़ी, हृदय की खुली पड़ी खिड़
प्रेम के सोत किये तुम बन्द, नेह के हम गाते हैं छ

(१६)

तुम्हारी मैं वृद्धा माता, हाथ उस पर कपता जाता
कमर लचगई उमर के साथ, छोड़ गये भरी आयु में नाथ

(१७)

तभी से तुम पर मन राखा, आंख तारे की बत् भाषा
किन्तु हुई सब आशा निर्मूल, मिलाया तुमने जीवन धूल

(१८)

हुए तुम बन्दी प्रीति के जाल, लटकती छोड़ी मेरी खाल
हो रही मैं तब से बरबाद, प्रार्थना समझो तुम बकवाद

(१९)

प्रेम से पाला इस दिन को, करोगे सेवा छिन छिन को
गये हा तुम सब बातें भूल, उठ रहा अतः हृदय में सूल

(२०)

चुकाया माता का ऋण यहां, न वैसा किया हाय जो कहीं
दुर्दशा हो रही अब दिन रात, पसीजा हृदय नहीं क्या तात

(२१)

नेत्र अब भी खोलो अपने, बनो मत तुम हमको सपने
वही मैं माता जो थी प्रथम, पूत तुम बदले अपने नियम

(२२)

पड़ोसी कर रहे अत्याचार, तुम्हारे खोये कहां विचार
समझ मन आओ मेरे पास, बहू से कहो तुम्हारी सास

(२३)

हो रही दुखी दलित तन छीन, तड़पती बिन जल के ज्यों मीन
अधिक मत तुम लेओ अभिशाप, वृद्धि की सेवा है नहिं पाप

(२४)

बनोगी जब तुम भी माता, हृदय पर धरो हाथ दुहिता
कलेजा होता सब का यही, पुत्र माता का धन ये कही

(२५)

अ यु अब गधा पचीसी ढली, खिल चुकी मनकी ललित कली
सुमरि मन सीता राम हरी, सुधारो बुद्धि स्वर्ण सी खरी

(२६)

क्षमा करती फिर भी तुमको, भूलना नहीं कभी हमको
दीघ जीवी हो बहु सम्पन्न, दे रही अशिस परम प्रसन्न

(२७)

ध्यान जननी निज भूमि रहे, भाव यह मनमें जमा रहे
पुत्र पर होता इनका भार, धन्य जीवन जग जाना सार

विपत्ति

(१)

घेरती तू बचपन से जिसे, लगाती ठोकर कसती उसे
विकल होकर वह घबड़ाता, सहारा जब न कहीं पाता
राम हा तब मुख से कहता, तुम्हारा घोर दण्ड सहता
अन्त में होता चकना चूर, मिला जीवन जाता है धूर

(२)

भूलता अपना सभी घमन्ड, निकल जाता है सारा चन्ड
हवा होता जाता उद्दन्ड, बिखरता फिरता होकर खण्ड
दया का हाथ चाहने को, डुलाता इधर उधर उसको
छोड़ते इष्ट मित्र उसको, न अपना कह सकता किसको

(३)

प्रबल इच्छायें जो उठतीं वहां की वहां जाय दबतीं
न होता कोई पूरा काम, शेष में वही प्रभू का नाम
हुआ हैरान दिनों के फेर, न सुनता उसकी कोई टेर
निरासा होकर जब सबसे, लगाता अपना मन प्रभु से

(४)

छोड़ तब जग के सब झन्झट, उठाता तप के वह संकट
भजन में लीन करे तन छीन, न वैसा पहिले कैसा दीन
जान कर उसके तप को ज्ञान, पास उसके आते धनवान
देख परिवर्तन वह अपना, हृदय में कहता 'क्या करना'

(५)

न अब उसको इच्छा धन की, न सुध कुछ इस नश्वर तनकी
विपत्ती को समझा वरदान, बढ़ाया जिसने उसका मान
लगाया ईश्वर ओरी ध्यान, राम रस करता रहता पान
चाहता रहता यह दिन रात, सताये माया नहिं मम गात

(६)

असार सब देखा है संसार, न पाया इसका कोई सार
भरी जग में अपना तेरी, मूर्ख समझे धरती मेरी
न लाये कुछ ले जाना साथ, सभी जाते हैं खाली हाथ
करो इससे अब भी परमार्थ, प्रभू का भजन करो बिन स्वार्थ

(७)

इसी में सब का है कल्यान, और जग झूठा मन में मान
सत्य नारायण प्रभु हैं एक, निभाते सदा सत्य की टेक

सदा वे अपनाते निज भक्त विमल अपयी देते हैं शक्ति
विपत्ती घबड़ाती उससे, सदा सुख की खाती जिससे

(८)

न आती है भक्तों के पास, दूर से उसको है यह त्रास
भक्ति की शक्ति प्रबल चहुं ओर, विपत्ती नहिं छू सकती छोर
है जगमें जीवन उसका सार, किया जिसने प्रभु से है प्यार
'चतुर्भुज' चरनन का जो दास, उसी की पूजी जग में आस

परिवर्तन

(१)

अब कहां सुन्दर वह आराम, जो लगता था सबको अभिराम
उजड़ता गया बराबर हाय, न वैसा अब गुलजार दिखाय

(२)

सूखते जाते हैं सब पात, बनाये से नहिं बनती बात
खुल गया भेद न वैसा चमन, लोप होता जाता है अमन

(३)

अथितका था जो अति आश्रय, ललित लावण्य सघन सुखमय
सहारा रहा सहा सब गया, न वैसी रही कहूँ पर दया

(४)

उड़ गये पक्षी डाली छोड़, जो बसते यां पर कई करोड़
पड़ा सब सूना सुन्न समान, देख कर तड़प रही है जान

(५)

पुष्प का लेकर बहुत पराग, अलापा भ्रमरों ने वह राग
आज वह हुआ सभी है लोप, समय का देखो पूरा कोप

(६)

दृष्टि माली ने है फेरी, लगी है राखों की ढेरी
अब न है वैसा सुन्दर हाल, तड़प कर लेता सबको काल

(७)

हुए फल फूल सभी सपने, कहें हम किसको अब अपने
कर्म फल शेष रहा है यहां, भोग भुगत जाता है कहां

(८)

दया दिखलाओ वन माली, दुखों की रात हटे काली
चांदनी शुभ्र सुक्ख की हो, पूर्ण आभा दिखलाती हो

(९)

लता जो अब हैं मुरझाई, हटाओ उनकी परछाई
वृक्ष के अङ्ग रहें लिपटी, न छू पावें उनको कपटी

(१०)

सब जगह होवे अपना राज, चलावें मेल जोल से काज
न आवे पतझड़ ऋतु अब यहां, दलित हों क्रूर कुकर्मी वहां

(११)

हमारा बाग रहे सर सन्त, रहे छायो चहुं ओर बसन्त
स्वर्ण के ढेर लगें सब ठांव, काग सब उड़ जावें कर कांव

(१२)

बजे मोहन की मुरली मधुर, होय वर भूमि सुहावन सुघर
कहें सखियों से सखियां उधर, बजी मोहन की मुरली किधर

(१३)

सुने हम उसकी सभी पुकार, जाय सब तन मन पूरा हार
करें न्यौछावर अपने प्राण, सहें हम भले व्यर्थ मय बांण

(१४)

हमारा करो आय कर त्राण, रहैं बाकी शरीर में प्राण
दलित मन कुसुम न हो पाये, हरा हर विधि से हो जाये

(१५)

कृपा कर अब तो हम को हेर, हमारी सुनो आय कर टेर
दीन दुखियों पर दया करो, हमारे कन्टक कष्ट हरो

(१६)

नेह नवनीत का स्वाद चखें, एक रस होकर सभी लखें
परस्पर ऐसा हो अनुराग, जगा दो फिर से सब के भाग

(१७)

चन्द्रमा की उस कला समान, बृद्धता पावें सभी सुजान
विमल यश छिटकावें चहुं ओर, मचे घर घर में ऐसा रोर

(१८)

परम पावन हों तन मन से, करें उपकार सभी धन से
दरिद्रता का हो जाये नाश, फंसे रहैं सभी प्रेम की फांस

(१९)

सुहावन मन भावन भरपूर, कुटुम्बी बनें न होवें क्रूर
कलह कायरता होवे नष्ट, उठावें अब न कभी हम कष्ट

(२०)

पाप से पा जावें छुट्टी, कुकर्मों से कर दें खुट्टी
मिलें प्रभु सब के मन के तार, जगत में अब नहिं होवे हार

(२१)

हरा हो जाये उजड़ बाग, न बोलें उसमें कपटी काग
कर्ण कटु सुनें न वैसा राग, सुरीली कोकिल कूके राग

(२२)

दुर्दशा होनी सो हो चुकी, रोकने से नहिं वह रुक सकी
अविद्या का कुछ हुआ प्रभाव, घट गये सभी तरह के भाव

(२३)

रूप रस गन्ध बने प्रेमी, प्रथम से रहे न हम नेमी
इसी से भोगे बहु संताप, लगाया सब को अपना पाप

(२४)

ओज बल तेज गया सब से, क्रोध के वशी हुए जब से
पतन का रूप नया हो गया, चिरम सीमा को लांघ गया

(२५)

हुए हम क्या से क्या इस समय, कला घट गई जानकी प्रलय
किया जिसने हमको निरुपाय, बनाये से नहिं बनत उपाय

(२६)

लोक लज्जा ने किया पयान, बढ़ गया सब के हृदय सयान
मच रही अब अपना तेरी, पीर नहिं एक एक हेरी

(२७)

जन्म भू का छूटा सब ध्यान, अब नहीं देते उस हित जान
बन गये सभी टकों के दास, कहो अब किस पर रक्खे आस

(२८)

चुंगे जब तक फल थे मीठे, करें क्यों मान जान सीठे
कहें सब मतलब का संसार, स्वार्थ से सना हुआ है अपार

(२९)

वृक्ष सुख देने वाले वही, खड़े हैं उसी रूप से सही
पर न उनमें वैसा सौरभ, कहां हा चला गया गौरव

(३०)

सुखद छाया जिनकी फैली, स्वच्छ सर्वत्र न थी मैली
आज पत्ते गिर जाने से, खड़े हैं कुछ अनजाने से

(३१)

उन्हीं के सुयश पड़े फीके, करें क्या यहां हाय जीके
सहारा तकते औरों का, पराये प्राप्त कोरों का

(३२)

है सच्चा वही जगत में मीत, दुक्ख में जो करता है प्रीति
सदा से चली आरही नीति, करो मत दुष्टों की परतीत

(३३)

किया है जिसने हमको नष्ट, हृदय को पहुँचाया अति कष्ट
है उसकी बालू कैसी भीत, नीव से कच्ची ओ भयभीत

(३४)

लोग कहते भव सिन्धु अपार, न पाता इसका कोई पार
यहां छल छिद्रों का व्यापार, समझ से परे न वारा पार

(३५)

मिटाने पर जो हमको तुले, न मन अब तक हैं उनके खुले
है कांटा कसक रहा ऐसा, किया नहिं कभी किसी जैसा

(३६)

सदा चलते शतरंजी चाल, उड़ा कर औरों के जो माल
न उनके घर हैं बने कभी, पराये धन से धनी सभी

(३७)

लगाई जो पोदें थी नई, उठ गईं उनमें से हैं कई
कहां तक कौन उठावे हानि, धर्म की नहीं रही है आन

(३८)

हमारा एक वही भगवान, जगत में जो रखता है मान
बचाओ इन कष्टों से नाथ, तुम्हारे सदा जोड़ते हाथ

(३६)

न मिलते अब पूजन को फूल, डालियां सूख चलीं नहिं मूल
किस तरह तुम्हें रिझायें नाथ, पकड़ना पड़ता अपना माथ

(४०)

दूध घृत स्वप्न हुए जाते, न हम अब हैं पूरे पाते
बिगड़ता जाता सभी विधान, उठानी पड़ती पूरी हानि

(४१)

कृपा की कोर न की यदुनाथ, तो हम किसको अब रगड़ें माथ
रम्य आराम बनाओ प्रभो, दीन दुखियों के हो तुम विभो

(४२)

कष्ट को नष्ट करन हारे, नाम प्रभु के हैं उजयारे
पड़े हम ओरों के पाले, बड़े विषधर हैं वे काले

(४३)

नाथ यदि नहिं लोगे अवतार, करोगे नहिं दुष्टों पर वार
पड़ेंगे जीवन के लाले, बहुत से घर उनने घाले

(४४)

कूद कालिन्दी तट आओ, पुनः माखन मिश्री पाओ
करो गोरक्षा फिर गोपाल, सुधारो दशा आय तत्काल

(४५)

तुम्हारे बिना बिगड़ गये हाल, पड़े सब ऐसे काल के गाल
न अब अपना कोई रक्षक, दिखाई पड़ते सब भक्षक

(४६)

दिखाओ झांकी वह बांकी, पिशाचन हृदय लगे टांकी
अन्त कर दो अब अत्याचार, ज्ञान गीता का होय प्रचार

(४७)

हमारी विनय यही कर्त्तार, बचाओ हमको आ इस बार
मगन मन हो जायें फिर से, करें शृंगार इसी कर से

(४८)

फलवती होय पूर्ण आशा, भरे सब विधि से अभिलाषा
सभी सब तरह होंय सम्पन्न, उछलते डोलें बनें प्रसन्न

(४९)

तोड़ दो बेड़ी ये परितन्त्र, बनाओ हमको आय स्वतन्त्र
जगाओ जगमें अपना मन्त्र, तुम्हारे बिना पड़े हैं जन्त्र

(५०)

होंय जिससे समृद्धि शाली, लगी यह आशा बन माली
विहंग पुन बोलें मधुरे बोल, दासता की उतरे यह खोल

(५१)

बसे फिर से यह ऊजड़ ग्राम, बने रहैं लेने वाले नाम
हमारी प्रभु से यही पुकार, बचाओ अब आकर घर द्वार

श्री देवी चालीसा

(१)

जय गणेश शंकर सुवन, सिद्ध करो सब काज।
दीनानाथ अनाथ की, कर गहि राखो लाज॥

(२)

परम गुरू शंकर जयति, सुमिरत जो सुख देत।
आशु तोष गोरी-पती, राखत पति सब हेत॥

(३)

जयति चामुण्डा लक्ष्मी, जयति शारदा मातु।
आदि शक्तिभय नाशिनी, रक्ष माम जय मातु॥

(४)

बल दीजै भक्ती प्रबल दीजै बुद्धि विशाल।
सत्य, धर्म ऐश्वर्य की, कर रक्षा तत्काल॥

(५)

त्रिभुवन की शक्ती प्रबल, सबमें तेरो बास।
दीन दुखी आतुर करें, माता तेरी आस॥

(६)

दास चतुर्भुज की तुही, एक मात्र आधार।
माता ममता तू भरी, प्रभुता पति की सार॥

(१)

करी सृष्टि उत्पत्ति जिसने सुहावन
नमस्कार उसको है जो सर्व पावन
जो हरती है सत्वर सदा दुष्ट प्राण
वह भक्तों का करती सदा कल्याण

(२)

जिसे कहते विष्णु माया जगत में
नमस्कार उसको हम उसकी भगत में

है चैतन्य शक्ती वही विश्व माही
नमस्ते उसे उस बिना विश्व नाहीं

(३)

हुए जब दुखी देव करें आर्तनाद
जय दुर्गे जय अम्बे यह कैसा विवाद
हरो मातु पीड़ा हमारी तमाम
नमस्ते ! नमस्ते !! नमस्ते नमामि

(४)

वह है बुद्धि रूप न्यायकारी सरूपा
नमस्ते उसे रूप जिसका अनूपा
वह नेकी विवेकी जगत की प्रणाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(५)

वह निद्रा है विश्राम रूपा सुहावन
नमस्ते उसे जो करै देह पावन
वह पोषक है सबकी पवित्रा निकाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(६)

क्षुधा रूप हो भक्ष्य को जो है दहती
नमस्कार उसको है जो अंग रखती
वही देहधारी की छाया ललाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(७)

वही विश्व शक्ती जो संचार करती
नमस्कार उसको जो है विश्व भरती
बिना उसके रहता पड़ा सब धाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(८)

वह तृष्णा सरूपा जगत को भ्रमाती
हर एक व्यक्ति को जो सदा से लुभाती
वही शान्ति रूपा विराजै सुधाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(९)

वही जाति है भेद जिसमें से होता
नमस्कार उसको जो सर्वस्य देता
वही योग माया, भली अभि राम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१०)

वह लज्जा कुलों की कला रूप से है
नमस्कार उसको भला रूप जो है
वही शान्ति पोषक उसी में है राम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(११)

वह श्रद्धा है वृद्धा पवित्रा प्रचार
जो रखती है अपने में सबका विचार

वही विश्व कान्ति दिपै सर्व ठाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१२)

वही राजलक्ष्मी जो करती है राज
उसी से हैं बनते भले राज-काज
प्रजा और राजा में करती विराम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१३)

वह शक्ती धृति कार्य कार्ये यशोधा
उमस्कार उसको वह योगीन्द्र योधा
वह जीवों की वृची जगत की सुदाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१४)

वह स्मृति सरूपा अजन्मा जहान
नमस्कार उसको है जो महान
जो हर एक के मस्तक में करती विराम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१५)

दया रूप से धर्म को जो चलाती
नमस्कार उसको वह सुन्दर प्रभाती
वही प्राणियों में है अद्भुत ललाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१६)

वही तुष्टि है जिस बिना जीव रोता
नमस्कार उसको वह सर्वेश होता
बनी मुक्तकारी बिहारी ललाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१७)

वही पुष्टि पूजन किया जिसका जाता
नमस्कार उसको जो पुष्टाई पाता
बिना उसके रहता वह प्राणी अराम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१८)

वही दिव्य माता करै प्यार पूरा
बिना उस कृपा जीव रहता अधूरा
कर पाकर के प्राणी बली हो सुधाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(१९)

वही भ्रांति जग की भ्रमाती है बुद्धि
नमस्कार उसको जो कर देती शुद्धि
है उसके ही हाथों में सबकी लगाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२०)

यह मेधा स्वरूपा सुहाती है सब में
बनी शक्ति देवी वह देवत्व प्रभु में

जो है सर्वथा सर्व में सर्व ठाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२१)

वही भूत वर्त्ती व्याप्त देवी महान
अधिष्ठान करती जो सब में समान
दश द्वार के हाथ ताले लल म
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२२)

वह है चित्त रूपा चिदानन्द शक्ती
बनाया जगत व्याप्य भोगं भुनक्ति
वह देवी बड़ी सबसे है सर्वनाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२३)

वह जानें स्वयं भैरवानन्द जैसा
मुझे भी शिवा देख तू नित्य तैसा
हमारे बनै नित्य तोसें सब काम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२४)

महा दैत्य औ पातकी तुम संहारे
तेरे रूप को लख जो करते किनारे
तू वेदों की माता मही है प्रणाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२५)

लै छल का सहारा है जग शुभ आया
किया नाश उसका अहो महामाया
जगत मातु जननी तू है सुख की धाम
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमामि

(२६)

तू लक्ष्मी है दुर्गा महादेवि वीरा
जो हरती है भक्तों की पल भर में पीरा
अहो अम्ब मिलता है सुख तव चरण में
मुझे राखियो मातु अपनी शरण में

(२७)

करै पाठ इसका जो प्रतिदिन प्रानी
बढ़े भाग्य वैभव फलै वाक्य वानी
करै नित्य अपनी कृपा महारानी
है उसको सुलभ सब वस्तु सयानी

(२८)

वह फूले फलेगा औ होगा निहाल
कृपा मातु की से बनेगा सुलाल
चतुर्भुज करै इच्छा उस भक्ति की
महा योग माया की वर शक्ति की

(१)

पद मात्रा अक्षरहु को, जो कहुँ त्रुटि भई होय
माता ताको कर क्षमा, कृपा दृष्टि अब होय

(११)

न उनमें है वसा लालित्य, छिड़ा सा लगता है अधिपत्य
कृपा रस से नहिं सींचोगे, आंख अब कब तक मीचोगे

(१२)

होयगा इनका बुरा हवाल, खायगा असमय में ही काल
न ऐसा हो पाये नर नाथ, संभालो बिगड़ी को दे साथ

(१३)

न इनका है कोई रक्षक, हर तरफ खड़े हुए तक्षक
मेटने पर हैं तुले गँवार, ध्यान नहिं है उनको इसबार

(१४)

बाद में पछतायेंगे पूर्ण, अभी जो करते जाते चूर्ण
न सुनने वाला कोई विलाप, करें चाहे जितना वहा प्रलाप

(१५)

हमारे वे न रहे साथी, मार बैठे जो हैं थाथी
लुटा सब पड़ा हुआ बाजार, कबूतर चुग गये बेझर ज्वार

(१६)

खेत में लगी रह गई बाल, खींचने को हैं उसकी खाल
डूबने को लुटिया बांकी, दिखाओ अब तो प्रभु झांकी

विकराल युद्ध

(१)

मचा यह कैसा हा हा कार, शान्ति सब खोई ना आहार
दिखाते दुखी दलित बेजार, न मिलती अब बेझर औ ज्वार

(२)

युद्ध दानव ने पीसे सभी, सताये साधु सन्त सब अभी
अन्न का उनको भी है त्रास, हो रहा सब बातों का ह्रास

(३)

त्रास में रहें अहर्निशि लोग, घटेगा यह सब कैसे सोग
वस्तु पर बढ़ी हुई गिरानी, नित्य प्रति की अब हैरानी

(४)

हाय कब होगा इसका अन्त, बचेंगे जीव जन्तु औ सन्त
समय विकराल हाल बे हाल, दिखाते सभी काल के गाल

(५)

तड़पते जाते पाणी छोड़, लगा है एक एक में होड़
हाय यह कैसी बरबादी, कभी हम जिसके ना आदी

(६)

न देखा सुना न ऐसा समय, रहें हम एक तरह से अभय
है रुपया दो आने का अभी, कार्य करने पड़ते हैं सभी

(७)

निराशा निशा आय घेरा, अजब यह हम पर है फेरा
है नईया जीवन की डगमग, नचाती खेवट को पग पग

(८)

भटकते भूंके प्यासे लोग, न हरता उनका कोई सोग
दया अब दूर हुई मन से, क्षीण सब दिखलाते तन से

(९)

अंधेरा छाय रहा चहुं ओर, दिखाई देता अब नहिं छोर
रुपये का दो पाव है तेल, चले अब कैसे जीवन मेल

(१०)

नहीं कर सकते यज्ञ और होम, हमारी क्रिया हुई बे लोम
बिक रहा तीन छटाकी घृत, नहीं निभ सकते इससे वृत

(११)

पड़े बीमार दवा नहिं पास, रह गई केवल प्रभु की आस
हमारा हरा करो अब बाग, मिले खाने को जिससे साग

(१२)

अलापें फिर वैसा ही राग, मनावें मिलकर सुन्दर फाग
बुरा ये समय जाय अब भाग, बुझै ये बढ़ी दुखों की आग

(१३)

समय ने दिखा दिया है अभी, जो मरते थे रुपये पर कभी
अन्न धन है अनेक धन सार, करो सब मिलकर इससे प्यार

(१४)

देश का धनी जो कलकत्ता, अन्न बिन उड़ गये सब लत्ता
हे अन्न देवजी नमस्कार, सब जीवों के आहार सार

(१५)

न बाकी अब शरीर में राम, न लगता सुन्दर हमको धाम
बनाओ फिर से अब बलवान, करें कुछ काम तुम्हारा ध्यान

(१६)

चिंता चिन्ता ये चाटे जाय, हमारे तन मन औ विवसाय
हरो हरि सभी हमारे कष्ट, करो अब नीच जनों को नष्ट

(१७)

प्रेम का भाव है घटता जाय, न वैसा कर्म धर्म है हाय
सत्य का लोप हुआ हर भांति, लगी झूठों की रहती पांति

(१८)

यही बगुला भक्ती का ठाठ, पढ़ाते जो औरों को पाठ
चबाई चुगुल खोर चहुं ओर, ऐंठते फिरते करते शोर

(१९)

नरक को स्वर्ग समझ बैठे, वे अपनी बातों पर ऐंठे
हुई जिससे है बरबादी, न अब हो सकती आबादी

(२०)

क्षिणक निस्वार्थ स्वार्थ के लिये, हैं जिनने नीच कर्म जो किये
करी क्या उनने रखवारी, खेत को खाय चली क्यारी

(२१)

दूध बिन तड़प रहे बच्चे, आयु के रहे अभी कच्चे
रहें क्यों जीवन उन इस काल, तड़पते गये बहुत से लाल

(२२)

वस्त्र की बढ़ती महिगाई, दया तुमको नहिं है आई
उघारे तन की बन आई, हरो दुख अब तो यदुराई

(२३)

पुण्य अब हुआ चाहता लोप, रहेगी कैसे हिन्दुन ओप
अन्न बिन नहिं हो सकता धर्म, हो चले लोप सभी शुभ कर्म

(२४)

अरे यह कैसा है विकराल, आरहा मुख को खोले काल
किये जाता है सबका कौर, न छोड़ी बाकी कोई ठौर

(२५)

सब जगह यही हाय पर हाय, मनुज को मनुज चला अब खाय
व्यवस्था शिथिल हुई जब से, होन लगीं हत्याऐं तब से

(२६)

कहीं पर बम्ब बरसते बड़े, कहीं पर वैसे मरते खड़े
कहीं जल मग्न किये हैं पोत, कहीं पर रह गये सोते सोत

(२७)

चली यह हवा एकसी क्यों, हमारी चाह बढ़ी ज्यों त्यों
दमन यदि करते इच्छायें, तो हो सकतीं थीं रक्षायें

(२८)

तुम्हारा खेल हमारा नाश, रही अटकी अब केवल स्वांस
इसे भी अब तुम झटको नहीं, अन्यथा हम न रहेंगे कहीं

(२९)

युद्ध दानव की बड़ी विशाल, लपकती जीवें हर दम लाल
तड़प कर पड़ता जिस ऊपर, तुरत भर लेता है खप्पर

(३०)

किये बहु देश सजे बिसमार, खड़े खंडहर हैं नहीं सुमार
बिलखतीं अबलायें बेहाल, मुखों पर डाले अपने बाल

(३१)

बन रहा यूरोप अब शमशान, सभी की बिखरी डोले शान
कुचलते एक एक की आन, भर गई लोहू से सब खान

(३२)

न इस पर भी है कोई शान्ति, बिगड़ती जाती सारी कान्ति
तुले हैं इसी बात पर वीर, रहे हममें से अब कोई मीर

(३३)

लगाये प्राणों की बाजी, लड़े जाते हैं सब नाजी
न दुनियां के कष्टों का ध्यान, वे रखना चाहें अपना मान

(३४)

चीन पर भूंका सिंह समान, झपटता जापानी मलखान
लगाये जाता नारा यही, एशिया मेरी होगी मही

(३५)

न डरते मित्र राष्ट्र से कभी, सामना करते जाते सभी
न जाने किसकी होगी हार, चाहती विजय यहां सरकार

(३६)

प्रवासी भारतवासी वीर, न छूटे कबहूं जिनके धीर
बड़े योधा ये कुशल महान, सभी करते इनका सन्मान

(३७)

दे रहे जन्म भूमि हित जान, गा रहे भारत गौरव गान
वीरता का है बीज प्रधान, हुए है भरती वीर निधान

(३८)

धीर भारत के बहु बांके, शत्रु भी देख बगल झांकें
ये योधा न्याई निडर महान, सत्य पर दे देते है जान

(३९)

न्याय का बल ये सब जानें, सत्य को केवल प्रभु मानें
काय करने की हैं इच्छा, कुशल पण्डित की यह शिक्षा

(४०)

कर्म का करने वाला और, निमित मात्र हम हैं इस ठौर
कराता वही जो उसके चित्त, हमारी कितनी हैगी वित्त

(४१)

धुरी राष्ट्रों से क्या डरना, सदा जी खोल खोल लड़ना
एक दिन जग में है मरना, करो कर्त्तव्य यही कहना

(४२)

अभी दिन छिपने को है दूर, समझ यह करो न चकना चूर
अन्त में पछताओगे मीत, हमारी सदा सत्य की जीत

(४३)

जगे जगमें वह उज्वल ज्योति, प्रभाकर की किरनों का श्योति
फिरें फूले हिय भरे प्रमोद, मगन मन सदा सुक्ख की गोद

(४४)

युद्ध का जीवन से सम्बन्ध, है करने पड़ते सभी प्रबन्ध
समर के कारण नहिं स्वछन्द, सहन करने पड़ते दुख द्वन्द

(४५)

वस्तु मिलती कठिनाई से, उजाला हो चिकनाई से
न मिलता वह अब है परियाप्त, डोलना पड़ता करने प्राप्त

(४६)

हुआ गुड़ अभी खांड के भाव, रुपये का आता है दो पाव
चला यदि इसी तरह बाजार, नाव नहिं जा सकती उस पार

(४७)

हुए सब राव रंग फीके, न कोई काम लगे नीके
पड़ गये जीवन के लाले, कहां तक अब हम व्रत पाले

(४८)

क्षीण बल होते जाते नित्य, यहां करने पड़ते सब कृत्य
रहा नहिं पथ्या पथ्य विचार, उदर भरने का एक प्रचार

(४९)

सहारा रहा सहा जारहा, हुआ दुख दाई युद्धि महा
धर्म का आया जाता छोर, दिखाई देती उसकी कोर

(५०)

सूखने लग गये वृक्ष हरे, अब क्या कोई हाय करे
समय के बिन मारे ही मरे, रह गये एक दिशा में परे

(५१)

समर का समय न बारम्बार, कमर कस हो जाओ तईयार
दिखादो अपने अब दो हाथ, तुम्हारा सत्य तुम्हारे साथ

(५२)

सीखलो इस पर मर मिटना, न पृथ्वी पर टेको घुटना
जाय सब समर भूमि पाटो, शत्रु के शीश सदा काटो

(५३)

जगाये जीवन जग जाता, उठाने से मन उठ आता
खून रग रग में भर उठता, कार्य में मन भी लग उठता

(५४)

अतः व्रत मनमें लो अब ठान, सभी में डालेंगे हम जान
करेंगे भारत का उद्धार, हरा हो जायेगा घर द्वार

(५५)

प्रभा प्रगटेगी अपरम्पार, उच्च नारा हो बारम्बार
हमारा देश सुहावन भेष, सरल जीवन से रहना शेष

(५६)

हुआ है जीवन दुखदाई, रही नहिं जिसकी सुनवाई
कहां तक खेवें अब इसको, हमारी चिन्ता है किसको

(५७)

समझ कर यदि हम करें मिलाप, तो ये घट सकते सब सन्ताप
खिल उठे फिर से फूल अपार, रहे मुरझाये जो मझधार

(५८)

बनें फिर से समृद्धिशाली, ध्यान उरु राखें बनमाली
भरे सुख का सौरभ सब ठौर, फिरें स्वछन्द सदा निज पौर

(५९)

हमारे फिर से होवें दौर, न पावें गिनती के हम कौर
पेट ने खाई अधिक चपेट, समय को बिता रहे हम लेट

(६०)

जगे जगमें वह उज्वल ज्योति, प्रभाकर की किरनों का ध्योति
फिरें फूले हिय भरे प्रमोद, मगन मन सदा सुक्ख की गोद

(६१)

चलावें सब घर घर चरखा, सूत के सभी बनें परखा
सुशीला सभ्य बनें नारी, न डोलें अब कन्या क्वांरी

(६२)

बनें सब गृह कार्यों में दक्ष, सती व्रत का पालें वे पक्ष
संतती रक्षा का हो ध्यान, रखें कुल मर्यादा का मान

(६३)

पुरुष की उन्नति का साधन, बनें नारी अति मन भावन
ललित कहलावें वे ललना, झुलावें लाल सदा पलना

(६४)

लाल उनके हों सच्चे लाल, जगावें भारत को तत्काल
बनें सब जन्म भूमि के भक्त, बहावें उसके हित में रक्त

(६५)

अविद्या तिमिर जाय सब भाग, एकयता का रागें सब राग
कलह कायरता होवे दूर, कहावें हीरे हम इस धूर

(६६)

जगे जगमें वह जगमग ज्योति, चमक पा जावें यहां के पोति
खिल उठे फिर से प्रेम प्रसून, निकल भागे मन से वह ऊन

(६७)

पूर्ण प्रभु करो ये अभिलाषा, आपसे लगी हुई आशा
भक्ति बल का दो हमें प्रधान, हमारे सबके हो तुम प्रान

(६८)

प्रभाकर की हो प्रभा पवित्र, अलापें प्रभु के विमल चरित्र
दयामय दीन बन्धु गुणखान, प्रजा पर करो कृपा कल्यान

(६९)

कहाते घट घट के वासी, प्रेम की परख करो खासी
हमें वर देउ यही भगवान, देश का करें पुनः उत्थान

(७०)

हिन्दुओं का हो हिन्दुस्तान, निभाते रहैं पूर्व सी सान
उरवसी भक्ति बनें प्रधान, साम सब वेदों का हो गान

(७१)

शान्तिमय हो जाये समाज, नाथ की कृपा करै सब काज
चतुर्भुज के दर्शन का लाभ, भक्ति नित पावें परम प्रभाव

देश दशा

(१)

देश की दशा बदलती जाय, चित्त चिन्ता में रहा समाय
बिगड़ते जाते क्रमशः ढंग, छान बैठे हैं मानो भंग

(२)

मरा फैशन पर भारत आप, निकल गई उसकी भारी भाप
कमर लचकाने वाले बड़े, न अब हैं वैसे दिल के कड़े

(३)

बड़े जो बनते अपने आप, लग गई टके टके पर छाप
रह गये वे मुँख को तकते, कभी कुछ अंट संट बकते

(४)

पड़े सब इसी समय के फेर, सिंह गीदड़ बन तकते हेर
रही नहिं उनकी वैसी सान, झर गई एक तरह से आन

(५)

न है अधिक र नहीं कृपाणा, चलाते खाली बैठे बाणा
हो रही टट्टी ओट शिकार, खुले अब चरते लखो विजार

(६)

किन्तु जो भारत का फल फूंट, बिठाये देता है अब ऊंट
है इच्छा मुसलिम लोग यही, हमारी बने और ही मही

(७)

बनाते कहीं है पाकस्तान, ध्यान नहिं लाते हिन्दुस्तान
पकाये जाते खिचड़ी अलग, तुले हमसे हैं होने विलग

(८)

इसी से पाले पोसे गये, आज वे रूप दिखाते नये
देखकर उनकी ऐसी चाल, बहाने पड़ते आंसू हाल

(९)

समझ कर यदि ये खेलें खेल, तुरत ही हो जाये वह मेल
हमारा होवे भारतवर्ष, मनावें चारों ओरी हर्ष

(१०)

न कोई कर सकता स्पर्श, मेल हो उनको पूरा कर्श
हरे हों फिर से उजड़े खेत, अभी तक मिले रहे जो रेत

(११)

विमल गंगा की हो धारा, जमुन जल निर्मल हो प्यारा
त्रिवेणी कैसा हो संगम, प्रेम रस बहा करे हरदम

(१२)

बहि उठे पुनः पूर्वी व्यार, कर उठें फिर हम वह व्यौहार
कला कौशल का हो सम्मान, दिखादें अपना वह अरमान

(१३)

खुलें सब जगह पै गौशाला, दूध घृत हो अनूप आला
प्रेम से पीवें वह प्याला, भूल जावें हम मधुशाला

(१४)

हमारा देश बनें वह भेष, न माने जावें हम वह मेष
रहैं वृतधारी बलधारी, क्रिया युत होवें संसारी

(१५)

जगत पालक हम कहलावें, न हमको कोई बहलावें
हमारी खरी बनें टकसाल, रहै हरदम व हमालो माल

(१६)

न हो संकोच न हो कुछ पाच, चतुरता की हो हम में लोच
पोलसी दूर जाय सब निकल, न होवें हम उससे अब विकल

(१७)

धर्म युत होय प्रजा पर राज, नीतिवत चलें हमारे काज
होंय फिर से समृद्ध सम्पन्न, देश मे भरे रहैं सब अन्न

(१८)

व्यवस्था वर्ण बनें फिर से, करें निज काम सभी कर से
सब में हो एक एक प्रतिप्रेम, निबाहें इसी तरह वे नेम

(१९)

करें पालन चारों आश्रम, सत्य से करें सदा हम श्रम
नीति न्याई हों निपुण महान, देश के नेता परम सुजान

(२०)

देश उन्नति का हो उर ध्यान, कला का हो पूरा सन्मान
घटे ये बढ़ती बेकारी, दूर हो यहां से बीमारी

(२१)

बनें सब सुजला सफला धाम, भूमि सब हो जाये अभिराम
सदा हो सुमिरन श्रीभगवान, पियें हम नित्य सुधा रस पान

(२२)

रूप रेखा हो सब की एक, हर तरह निभे सभी की टेक
कुशल बलशाली व्रतधारी, पुरुष सब होवें करवारी

(२३)

सईयमी बनें पूर्ण विद्वान, बली भारत की हो सन्तान
ब्रह्मचारी हों आचारी, ज्ञान के पुन्ज सदाचारी

(२४)

दिखादें फिर से वैभव वही, वेद में जो ईश्वर ने कही
निभाने की शक्ति को पाय, बनालें फिर से वह समुदाय

(२५)

उच्च हो मस्तक उच्च विचार, करें सब में हम यही प्रचार
सत्यवादी हों सच्चे मीत, करें हम सब की सब परतीत

(२६)

चाहते यदि तुम कुछ करना, संगठन करो एक अपना
न समझो अब इसको सपना, तुम्हारी लगी हुई झपना

(२७)

क्रूर कायरता देउ निकाल, बजाओ नहीं वृथा को गाल
कार्य करने को हो तत्पर. न भूलो अपने को सत्वर

(२८)

हृदय मन्दिर को रक्खो स्वच्छ, न घुसने पाये कलमष मच्छ
तुम्हारा देव हृदय अन्दर, झुकाओ शीश वन्दना कर

(२९)

करेगा वह तुम से भी प्यार, न होगी कभी तुम्हारी हार
सीखना रहना सादा सदय, बिताना अपना जीवनन अभय

(३०)

समय यह है पतझड़ का मीत, न होना इससे तुम भयभीत
सदा रखना मन में विश्वास, तुम्हारे बड़े मोल के स्वास

(३१)

अगर बच जायेगी डाली, कली फिर लायेगी लाली
खिलेंगे फूल फलेंगे फल, आयेगी मरु में पूरी कल

(३२)

छायेगा फिर से वही बसन्त, करेगा हम सब को सरसन्त
डार द्रुम पल्लव औ बेली, झूम झुक जायें अलबेली

(३३)

कोकिला कूके मधुरे बोल, मुदित हो मन की घुन्डी खोल
फुवारे चलें प्रेम के सदा, मोदभर राखें अपनी अदा

(३४)

विश्व बीणा की यही पुकार, विजय का पड़े गले में हार
एकता का मिल जाये तार, सरस बाणी निकले हर बार

(३५)

बिकें नहिं रुपयों की बोटें, न हम भोलों को जा पोटें
सत्य के बल पर होय चुनाव, रहैं शुभ सदा शुद्धि ये भाव

(३६)

परम पावन हो जीवन पुनः, रहैं अन्दर से शुद्धि मनः
क्रूर कलमष से छूटे पाप, करें हम रक्षा अपनी आप

(३७)

प्रजा सेवा हो तन मन से, करैं नहिं लालच हम धन से
हनमवत होकर परम प्रवीण, कहाये जावें सभी प्रवीण

(३८)

बढ़ रहा अबजो ये विभचार, न करते इसपर तनिक विचार
ये है सह शिक्षा का परिणाम, बनाये बिषयों के जो गुलाम

(३९)

हो रहे अन्तर जाती ब्याह, रोक बिन बढ़ती जाती चाह
हुआ अब जिसका यही निचोड़, उच्च घर रहे क्रम को फोड़

(४०)

लुप्त पिन्डोदक हुई क्रियां, चिन्ह पूजा है अब जहं तहां
क्रिया सब भूल गये अपनी, दिखाई पड़ रहे ठग ठगनी

(४१)

पराक्रम गया इसी के साथ, मिलाने लग गये जब से हाथ
हुए हम निर्बलता के दास, लगे तकने औरों की आस

(४२)

समय के हम न रहे पावन्द, किया उसने हमको ही बन्द
न मिलती चैन है एक घड़ी, जेब में रह गई घडी पड़ी

(४३)

न कोई ललित कला की कदर, पड़ी बिखरी डोलें वे सदर
ढेर हैं धन्यवाद के लगे, पराये पैसा के सब सगे

(४४)

पड़ा पासा है किस रंग का, समझ से परे अजब ढंक का
हार है जीत न जानी जाय, बनें क्या सूरत हे यदुराय

(४५)

समय के जो हैं नृपति महान, आज उनका ऐसा गुणगान
इन्हीं के पूर्वज कुशल प्रधान, जो करते इन्द्रयज्ञ अनुष्ठान

(४६)

किन्तु हा बिगड़ा कैसा काल, हुए इन्द्री लोलुप भूपाल
त्यागते राजपाट धनधाम, किन्तु नहि त्यागे कुटिल हराम

(४७)

बने वे विषय वासना दास, राखते अन्य त्रियन को पास
गमाते इन्द्री हित निज मान, हुए जाते क्रमशः बलिदान

(४८)

छोड़कर अपना सब गौरव, छलों में बने हुए कौरव
भव्य भारत का नहिं कुछ ध्यान, न करते प्रजा जनों की कान

(४९)

समय का चक्र बड़ा बलवान, बनाते क्या से क्या भगवान
शुद्ध बुद्धी का करो प्रदान, जगत नायक जग पालक प्रान

(५०)

अब नहीं विमल प्रेम की छाप, नेह में मिला हुआ है पाप
हर जगह यही कलह का बीज, विवश रहना पड़ता है खीज

(५१)

बनाते जिसे गले का हार, गले पड़ देता वोही मार
कपट का वही गरम बाजार, फूट फैले है जहँ तहँ जार

(५२)

लोग कहते कलयुग का राज, हो रहे इससे उलटे काज
बिगड़ते जाते सभी समाज, दिखाने भरका उनका साज

(५३)

देखलो बिगड़ा आडम्बर, चढ़ गया उस पर यह नम्बर
कसाई जैसा है व्योहार, चल रहा छल से अब व्यौपार

(५४)

उठ गया सत्य सरसता सार, कहां है अब खांड़े की धार
न वैसा सुन्दर शील सुभाव, जुआ के खूब लगाये दाव

(५५)

कर रहे अपना जीवन भ्रष्ट, पतित बन होते जाते नष्ट
बिना बातों पर होते रुष्ट, अधिक मिलने पर नहिं सन्तुष्ट

(५६)

हवस यह मनमें रहै सवार, सदा हम करें अन्य पर वार
लोभ के वसीभूत होकर, डोलते फिरते खा ठोकर

(५७)

न खुलती फिरभी उनकी अक्ल, बिगड़ती जाती सारी शक्ल
सरासर होते हैं बरबाद, झूंठ का फिर भी लेते स्वाद

(५८)

बिगाड़ा औरों को जिनने, है माना अपने को उनने
बनाया अपना ही घर द्वार, दिखाया भड़कीला दरबार

(५९)

लुटाई मूंठ झूंठ के साथ, किया नहिं अपना खाली हाथ
वकालत करी इस तरह जाय, किया सीधा उल्लू हरराय

(६०)

न मरने वालों का है ध्यान, न अपने का कुछ भी सन्मान
चाटुकारी में बड़े प्रवीण, लगाते हां में हां की मीण

(६१)

है उठती जाती जिससे साख, बन गया भारत फिरसे राख
हर तरह हुई हमारी लूट, बनाये उस पर गये हम झूंठ

(६२)

नीचता का यह नंगा नांच, हीरे की जगह लिये हैं कांच
कर रहे अपनी मनमानी, पराई पीर न है जानी

(६३)

शुद्धि सोने में मिलती खोट, सदा पहुँचाई जाती चोट
पाप करते हैं सत्य की ओट, धूर की बांधी जाती पोट

(६४)

चलन कुछ बदल गया ऐसा, न है घर घर में अब पैसा
धातु सब हो गइ मानो क्षीण, एक मारग पर सब लवलीण

(६५)

हुआ है कागज जब से तेज, दुतरफा लिखने पड़ते पेज
परीक्षा नियम भंग हो चले, परीक्षक उभय हाथ को मले

(६६)

बनें थे प्रेस खोलकर लाल, आज उनके भी बैठे गाल
बजा नहिं सकते अब वे गाल, देखकर अपना ये सब हाल

(६७)

पुस्तकें जो छपती दिन रात, अब कहां वैसी है गी बात
प्रेस भी लगे होन सब बन्द, बना महगाई केवल छन्द

(६८)

स्वदेशी का नहिं हुआ प्रचार, रह गये मन के धनी विचार
हाथ मल कर रहना पड़ता, अधिक मन देख देख कुढ़ता

(६९)

पेट भरने का केवल ध्यान, रह गया पत्रों में सम्मान
देश की सुद बुध सब भूले, पड़े देखो अब सब लूले

(७०)

सो रहे आज हैं सभी समाज, हाथ पर हाथ धरे नहिं काज
पुनः कब होगा यह उत्थान, वीर कब करें यहां प्रस्थान

(७१)

किया है जिसने पूरा त्याग, अलापा आय एकता राग
वही है धन्य जीव जगमें, समाय जो है रग रग मे

(७२)

मिटाने से नहिं है मिटती, रेख जो करमें आ पड़ती
कर्म करना है उसके साथ, रगड़ना पड़ता अपना माथ

(७३)

भूल जो हमसे हुई अनेक, कर रहे प्राश्चित अब प्रत्येक
फूट का यही हुआ परिणाम, हाथ से खोया सब धन धाम

(७४)

न अब तक उसे समझ पाये, एकयता के बहु सुर गाये
अन्त में वही ढाक के पात, रह गये कर मलते हम तात

(७५)

चमक जो कभी हमारी रही, आत्मा बल विवेक के सही
हुई अब वह निर्बल निर्मूल, मिली जाती है जाके धूल

(७६)

समझते केवल धन को सार, धर्म से विमुख हुआ संसार
लाज पर गाज पड़ी जब से, शील सब हुआ लोप तब से

(७७)

न है घर घर में वह सुख चैन, कलह कायरता ही दुख दैन
बनें जबसे विषयों के दास, टूटने लगी तभी से आस

(७८)

आयु नहिं पूरी अब पाते, सदा हम मुंह की हैं खाते
छूटते जाते सब साथी, पराक्रम का न रहा हाथी

(७९)

सुधारो बिगड़ी को नर नाथ. कृपा की कोर करो यदुनाथ
दया मय दीन बन्धु गुण खान, हमारा राखो अब प्रभुमान

(८०)

बनाओ हमको प्रभु सम्पन्न, हमेशा राखो हमें प्रसन्न
देश की दशा सुधारो आय, हमारा मन जिससे हर्षाय

वसन्त

कवित्त

(१)

मिलता नहीं है आहार भर पेट आज ।
पीले पड़े गात तात क्षुधा की सहन्त से ॥
भोजन बिना नहिं लगता भजन में मन ।
योजना न कोई ठीक बैठे सुखन्त से ॥
चतुर्भुज तुम्हारी कृपा वृष्टि के न होने से ।
सूखने लगे हैं सरस हृदय अनन्त से ॥
चना चिरौंजी हुए चावल हैं चाय सम ।
होवें प्रसन्न कैसे हम इस बसन्त से ॥

(२)

आयो ऋतु राज किये मदन समाज साज ।
मनमा हिये में धार विजय दिगन्त की ॥
फूले बन झूले द्रुम त्रिविध समरि भौंर ।
कोकिला अलापें दै दुहाई ऋतु कन्त की ॥
चतुर जमाओ आय उलट मनोजरग ।
भई हैं समान गति संत औ असत की ॥
प्रेम बरसावनी सुमोद झरलावनीसु-
हावनी सुभावनी बधाई है बसन्ती की ॥

* इति शुभम् *

साहित्याचार्य, रावत, पं० चतुर्भुजदास चतुर्वेदी द्वारा लिखित पुस्तकें

(१) चतुर्भुज मतमई (approved by the Oriental Deplt) बरोदा
(२) चतुर्भुज नीति
(३) आत्मोल्लास या रुबाई याते चतुर्भुज
(४) पानाञ्जलि
(५) मंगला चरण
(६) योगी आर्थर approved bythe D. P. I. प्रयाग
(७) उपदेश प्रभाकर
(८) अनन्त वर्मा नाटक
(९) बेपेंदी का लोटा (नाटक)
(१०) विवेक वाटिका
(११) वृज पद्यावली प्रथम भाग approved by the D. P. I. भरतपुर
(१२) वृज पद्यावली दूसरा भाग approved by the D. P. I. इलाहाबाद प्रयाग
(१३) व्याकरण प्रवेश approved by the D. P. I. C. P. & Barar, Jaipur govt. & Bharatpur
(१४) मेरा स्वप्न
(१५) कमला (अंग्रेजी उपन्यास)
(१६) सुरीली बांसुरी
(१७) गोपालदास (सामाजिक प्रहसन)

(१८) महावाक्य
(१९) सुमनसवैया
(२०) प्रेम रहस्य
(२१) बालचर वंदना
(२२) सुशील स्काउट
(२३) हिय-हिलोर
(२४) बाल कथा प्रकाश
(२५) प्रभाकर प्रभा
(२६) ज्योतिष चिन्तामणि

ज्योतिष चिन्तामणि पर माननीय विद्वानों की आई हुई सम्मतियां

जयपुर राज सभा प्रधान पण्डित महामहोपदेशक समीक्षा चक्रवर्त्ती विद्यावाचस्पति पण्डित श्री मधुसूदन ओझा, जयपुर

साहित्याचार्य पं० चतुर्भुजदासजी चतुर्वेदी द्वारा लिखित ज्योतिष चिन्तामणि का मैंने अवलोकन किया। पुस्तक बड़े परिश्रम एवं खोज से लिखी गई है इसमें गणित, फलित, सामुद्रिक आदि अनेक विषयों का समावेश है साथ ही में लेखक ने प्रत्येक विषय को रोचक भी बनाया है जिससे प्रत्येक पुरुष की समझ में आजाय।

पुस्तक अपने ढंग की अनूठी है मैं हृदय से इस पुस्तक का प्रचार विश्व विद्यालयों तथा पाठशालाओं में चाहता हूँ। इस

पुस्तक ने समय का बचाव इस प्रकार किया है कि जो विद्यार्थी लोग दसवर्ष में पढ़ते थे वह अनुमानतः एक वर्ष में पढ़ लेवेंगे और अच्छी तरह से अच्छा अभ्यास कर लेंगे साथ ही उनको अन्य शास्त्रों के अध्ययन करने का भी पर्याप्त समय मिलेगा। इस ज्योतिष चिन्तामणि पुस्तक को लिखकर पं० चतुर्भुजदास चतुर्वेदी जी ने जो जनता का उपकार किया है और हिन्दी साहित्य को ठोस कार्य दिया है उसके लिये हम सब लेखक के सदा आभारी रहेंगे। लेखक वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं।

ह० पं० मधुसूदन शर्मा ओझा
ता० ६-१-१९३६ जयपुर राजकीय प्रधान,
पुस्तकशालाध्यक्ष

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान महामहोपाध्याय श्रीमान् गिरिधर शर्मा जी चतुर्वेदी शास्त्री, व्याकरणाचार्य प्रिंसीपल महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर राज की सुसम्मति

मैंने भरतपुर निवासी श्रीयुत चतुर्भुजदासजी चतुर्वेदी द्वारा निर्मित ज्योतिष चिन्तामणि का अंशतः अवलोकन किया इसमें ज्योतिष के फलित भाग सम्बन्धी विषयों का अच्छा संग्रह किया गया है। विषय और भाषा दोनों की दृष्टि से यह पुस्तक प्रशंसनीय है। उपयोगी विषयों का परिश्रम से संकलन है और निरूपण पद्धति इतनी सरल है कि थोड़े ज्ञान वाला पुरुष भी इससे लाभ उठा सकता है। ज्योतिष के फलित विषय का हिन्दी

भाषा में इतना बड़ा और अच्छा संग्रह अभी देखने में न आया था लेखक महोदय ने इस प्रकार के उत्तम संग्रह द्वा जनता और हिन्दी भाषा दोनों का उपकार किया है जिसके लि वे बधाई के पात्र हैं। मैं इस पुस्तक का विद्यानुरागी सज्जनों पूर्ण प्रचार चाहता हूँ। माघ कृ० ५ सं० १९९५ वि०

ह० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी,
अध्यक्ष, महाराजा संस्कृत कालेज जय

हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रिय महाशय,

आपकी सूची मिली। आपके इस प्रयास और खोज के लि इस हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

ह० साहित्य मन्त्री,
साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग।